DR. PRATIVA SATPATHY

Dr. Prativa Satpathy is an eminent and celebrated poet, critic, translator and editor in Indian literature and is known for her profound contributions to Odia language and literature.

2. Born on 18th January, 1945, in the Cuttack district of Odisha, Dr. Satpathy received her post-graduation and Ph.D. degrees from Utkal University. She has taught in reputed government colleges of Odisha, both at UG and PG levels, throughout her illustrious teaching profession under the Government of Odisha, which also includes academic research work and administration too. She retired from the Odisha Education Service as a member of the Staff Selection Board, Odisha. Along with her teaching profession, she has also edited two literary magazines titled 'Istahar' and 'Udbhas', which have a landmark in the field of Odia literature for their editing values.

3. Dr. Satpathy's poetry and poetic work are noted for their emotional depth, feminist perspectives, and exploration of personal and societal themes. Her poetry often reflects the experiences of women in Odia society, addressing issues like identity, empowerment, and social constraints. Her writings frequently highlight women's struggles and aspirations, blending traditional Odia cultural elements with contemporary feminist thought. She delves into intimate aspects of human connections, love, loss, and resilience. Her work has inspired a generation of writers, particularly women, to articulate their experiences through literature. Her poetry remains relevant for its exploration of universal themes through the lens of Indian culture, life, myth and humanity, resonating with readers across linguistic and cultural boundaries. Her contributions to Odia literature have 20 poetry collections, 04 critical research works, 6 essay collections, 8 books on translation, 01 autobiography and biography, one travelogue, etc.

4. Dr. Sathpathy's poetry collection includes titles like Asta Jahnara Elegy, Grasta Samay, Sahada Sundari, Niyata Vasudha, Nimishe Akshara, Mahamegha, Shabari, Tanmay Dhuli, Adha Adha Nakshatra', Kahi na Hele, Tuma paain Thare Sabuthara, Jaba Kusum Sankaasang, Ajaramara, Hrudaya Kholi Dele and other titles. Her most notable research-orientated critical works are Kalpanaara Abhishek, Spandanar Bhumi, Pratifalan, Uttara Adhunik Odia Kavita O Anyanya Prabandha, Bharat Matara Luha, Kabitara Udbhasan O Nabyalochana, Nari Janma, Nari Astitwara Bastabata: Bibarttita Odia Kabita, etc. She has also penned her autobiography in a book titled 'Shaishabaru Sansar' alongwith the biography of eminent lady freedom fighter Sarala Devi. Along with editing literary journals, she has also translated books by eminent Nobel Prize winners and veteran Indian authors. Her literary works are also widely translated into all major Indian languages and poems in foreign languages like English, French, Spanish, Arabic, Hungarian and some other languages.

5. Dr. Sathpathy's poetry collection titled 'Nimishe Akshara' was awarded by the Odisha Sahitya Academy in 1986. Her collection 'Shabari' received the prestigious Sarala Award in 1991 and 'Tanmay Dhuli', awarded by Sahitya Akademi (National Academy of Letters), New Delhi, in 2001, which is translated into 13 Indian languages, including English, under the title 'Enchanting Dust'. she is awarded many prestigious national awards, like the Kabeer Samman, 2014, from the hands of the Honourable President of India in the year 2017. She has also received the N.N. Thirumalamba Saswati Rastriya Puraskar, Karnataka, for her poetry collection 'Adha Adha Nakshatra' in the year 2001. She is honoured with the Gangadhar Meher National Poetry Award for 2025 from Sambalpur University.

डॉ. प्रतिभा शतपथी

डॉ. प्रतिभा शतपथी भारतीय साहित्य की एक प्रख्यात और प्रतिष्ठित कवि, आलोचक, अनुवादक और संपादक हैं और उन्हें ओड़िया भाषा और साहित्य में उनके गहन योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 18 जनवरी, 1945 को ओडिशा के कटक जिले में जन्मी, डॉ. शतपथी ने उत्कल विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने ओडिशा सरकार के तहत अपने शानदार शिक्षण पेशे के दौरान ओडिशा के प्रतिष्ठित सरकारी कॉलेजों में स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर पढ़ाया है, जिसमें अकादमिक शोध कार्य और प्रशासन भी शामिल है। वह ओडिशा शिक्षा सेवा से कर्मचारी चयन बोर्ड, ओडिशा की सदस्य के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। अपने शिक्षण पेशे के साथ–साथ, उन्होंने 'इस्तहार' और 'उद्भास' नामक दो साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन भी किया है, जो अपने संपादन मूल्यों के लिए ओडिया साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर हैं।

3. डॉ. शतपथी की कविता और काव्य रचनाएँ उनकी भावनात्मक गहराई, नारीवादी दृष्टिकोण और व्यक्तिगत और सामाजिक विषयों की खोज के लिए जानी जाती हैं। उनकी कविताएँ अक्सर ओडिया समाज में महिलाओं के अनुभवों को दर्शाती हैं तथा उनकी पहचान, सशक्तिकरण और सामाजिक बाधाओं जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं। उनके लेखन में अक्सर महिलाओं के संघर्ष और आकांक्षाओं को उजागर किया जाता है, जो पारंपरिक ओडिया सांस्कृतिक तत्वों को समकालीन नारीवादी विचारों के साथ मिलाते हैं। वह मानवीय संबंधों, प्रेम, हानि और प्रतिरोध के अंतरंग पहलुओं पर गहराई से विचार करती हैं। उनके काम ने लेखकों की एक पीढ़ी, विशेष रूप से महिलाओं को साहित्य के माध्यम से अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया है। उनकी कविताएँ भारतीय संस्कृति, जीवन, मिथक और मानवता की दृष्टि से सार्वभौमिक विषयों की खोज के लिए प्रासंगिक बनी हुई हैं, जिसकी गूंज भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं के पार पाठकों को सुनाई देती है। ओडिया साहित्य में उनके योगदान में 20 कविता संग्रह, 04 आलोचनात्मक शोध कार्य, 6 निबंध संग्रह, 8 पुस्तकों का अनुवाद, 01 आत्मकथा और जीवनी, एक यात्रा वृत्तांत आदि शामिल हैं।

4. डॉ. शतपथी के काव्य संग्रह में अस्ता जहांआरा एलीगी, ग्रस्ता समय, सहदा सुंदरी, नियता वसुधा, निमिषे अक्षरा, महामेघा, शबरी, तन्मय धूलि, आधा अधा नक्षत्र', कहीं ना हेले, तुमा पइन थारे सबुथरा, जाबा कुसुम संकासंग, अजरामारा, ह्रदय खोली देले और अन्य शीर्षक शामिल हैं। उनकी सबसे उल्लेखनीय शोध–उन्मुख आलोचनात्मक रचनाएँ हैं कल्पनारा अभिषेक, स्पंदनार भूमि, प्रतिफलन, उत्तर आधुनिक ओडिया कविता ओ अन्यन्या प्रबंध, भारत मातर लुहा, कबितरा उदभासन ओ नब्यालोचना, नारी जन्म, नारी अस्तित्वा बस्ताबताः बिबरतिता ओडिया कबिता, आदि। उन्होंने प्रख्यात महिला स्वतंत्रता सेनानी सरला देवी की जीवनी के साथ 'शैशाबारु संसार' नामक पुस्तक में अपनी आत्मकथा भी लिखी है। साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादन के साथ–साथ उन्होंने प्रख्यात नोबेल पुरस्कार विजेताओं और दिग्गज भारतीय लेखकों की पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। उनकी साहित्यिक कृतियों का सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में व्यापक रूप से अनुवाद किया गया है और उनकी कविताएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, अरबी, हंगेरियन और कुछ अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित हुई हैं।

5. डॉ. शतपथी के कविता संग्रह 'निमिषे अक्षरा' को 1986 में ओडिशा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया था। उनके संग्रह 'शबरी' को वर्ष 1991 में प्रतिष्ठित सरला पुरस्कार मिला और 'तन्मय धूलि' को वर्ष 2001 में साहित्य अकादमी (राष्ट्रीय साहित्य अकादमी), नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया, जिसका 'एनचेंटिंग डस्ट' शीर्षक के तहत अंग्रेजी सहित 13 भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उन्हें वर्ष 2017 में भारत के माननीय राष्ट्रपति के हाथों कबीर सम्मान, 2014 जैसे कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें वर्ष 2001 में उनकी कविता संग्रह 'आधा आधा नक्षत्र' के लिए कर्नाटक का एन.एन. थिरुमालम्बा सास्वती राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। उन्हें संबलपुर विश्वविद्यालय से वर्ष 2025 के लिए गंगाधर मेहर राष्ट्रीय कविता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।